ISSN-2582-144X

खुशहाली एवं प्रगति के पथ पर आदिवासी कृषक : कृषि विज्ञान केंद्र की अनूठी पहल

आर के यादव, आई एस तोमर एवं सजीव गर्ग

"पिछले कुछ वर्षों में इन क्षेत्रों में कृषिगत विकास देखा गया है जिसके कारण नवीन कृषिगत तकनिकियों का समावेश कृषि में देखा जा रहा है। जिले में बहुत से कृषक अब इन नवीन विधाओं को अपनाकर अन्य कृषकों के लिए प्रेरणा स्रोत बन रहे हैं और आदिवासी कृषकों के उत्थान में सहयोगी बन रहे हैं। कुछ कृषक के अनुभव काफी रोचक एवं प्रेरणादायी हैं।"

अलीराजपुर एवं झाबुआ मध्य प्रदेश के आदिवासी बाहुल्य (87:) जिले है एवं जीवन यापन का मुख्य आधर कृषि है जिले की मुख्य खाद्यान फसल मक्का है (1.15 लाख हेक्टेयर) जो कि रबी व खरीफ व जायद तीनों मौसम में उगाई जाती है लेकिन कृषकों में कृषि ज्ञान की कमी, अशिक्षा, आर्थिक कमजोरी एवं भूमि के ऊबड़ खाबड होने से जिले में फसलों की उत्पादकता बहुत कम है। अतिरिक्त आय अर्जन हेतु कृषको को पलायन करना पड़ता है।

आदिवासी कृषक कृषि के अतिरिक्त जंगलों से प्राप्त उत्पादों जैसे महुआ, सीताफल, आम, ताड़ से प्राप्त पेय पदार्थ, लकड़ी आदि से आमदनी प्राप्त कर जीवनयापन हेतु रुपये एकत्रित करते हैं। इस क्षेत्रा में आदिवासियों की तीन प्रजातियां पायी जाती हैं– भील, बिलाला एवं पटलिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र अलीराजपुर (म.प्र.)

अशिक्षा के कारण आदिवासी कृषक कृषक कृषिगत नवीनतम ज्ञान से अंजान ही रहते हैं या ये भी कह सकते हैं कि जब तक सहयोग जैसे सामग्री, नकद राशि या संस्थागत माध्यम से मिलता रहता है तो कदम से कमद मिलाकर आगे बढ़ते रहते हैं। और ज्योंहि ये बंद होते हैं

चित्र 1 : उन्नत हसिये से गेहूँ की फसल की कटाई करते हुए मान सिंह जी

वापस उसी पारंपरिक पद्धति की ओर वापस चले जाते हैं।

आदिवासी कृषकों की प्रगतिः

श्री मान सिंह पिता खीमा जाति भील उम्र 45 वर्ष गॉव गोलावड़ी विकासखण्ड रामा तहसील झाबुआ जिला झाबुआ के निवासी है जो कि अपनी 0.75 हेक्टियर भूमि में एक (सोयाबीन) या दो (मक्का व चना) वर्षा आधारित परम्परागत तरीके से खेती करते थे जिसमें उन्नत प्रजॉति, बीजोपचार, पौध संरक्षण व उन्नत तकनीक का ज्ञान न होने से अधिक श्रम के वावजूद आमदनी कम थी, फसलों की पैदावार व आय अधिक प्राप्त नहीं हो पाने से परिवार को चलाने के लिए मजदूरी का सहारा लेना पड़ता था और मजदूरी के लिए पलायन करना पड़ता था।

सारणी– 1 से पता चलता है कि मानसिंह सभी फसलों की स्थानीय देशी किस्में उगाते थे तथा लगातार एक या दो

सारणी 2 : मिर्च की फसल की कटाई करते हुए मान सिंह जी

फसल का नाम	रकवा (है.)	किस्में	बीज उपचार	समन्वित पोषक प्रंधन	समन्वित कीट व रोग प्रंधन	प्रशिक्षण	कृषिगत भ्रमण	पैदावार	आय
मक्का	0.40	देशी	नहीं	नहीं	नहीं	नहीं	नहीं	3.5	2500
सेयाबीन रबी	0.25	देशी	नहीं	नहीं	नहीं	नहीं	नहीं	2.5	3200
चना	0.50	देशी	नहीं	नहीं	नहीं	नहीं	नहीं	4.1	5300
मजदूरी							कृषि मजदूरी		3600
							कुल आय		14600

सारणी 2 : मान सिंह की 2011 के बाद कृषि पद्धति एंव आय का विवरण

फसल का नाम	रकवा (है.)	किंस्मे	बीज उपचार	समन्वित पोशक प्रंधन	समन्वित कीट व रोग प्रंधन	प्रशिक्षण	कृषिगत भ्रमण	पैदावार क्वि.	आय
				खरीफ					
मक्का	0.20	जे वी एम–421	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	3.00	2000
सोयाबीन	0.20	जे एस–9560	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	3.25	5000
टमाटर	0.10	रेड गोल्ड	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	60.0	6000
मिर्च	0.15	तेजल	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	10.0 (हरी) 0.75(सूखी)	7200
बैंगन	0.10	लोंग परपल	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	8.00	2250
				रबी					
गेहूँ	0.20	एच आई–1418	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	10.0	6000
मक्का	0.10	संकर	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	5.00	3150
मैथी	0.10	उन्त किस्म	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	2.00	1500
पालक	0.05	उन्त किस्म	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	1.00	750
प्याज	0.05	एग्री फाउन्ड लाइट रेड	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	15.00	5300
लहसुन	0.05		हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	हॉ	5.00	2600
					कुल आय				41750

चित्र 3 : कम लागत पौधशाला में काम करते हुए मान सिंह जी

फसलें लेते थे ज्ञान के अभाव मे उर्वरक का प्रयोग नही करते थे फलस्वरुप फसलों की पैदावार बहुत कम अर्थात वार्षिक आय 14600 रूपये थी।

वर्ष 2009 से विभिन्न परियोजना का लाभ लेते हुए कृषक श्री मान सिंह ने परम्परागत खेती की जगह वैज्ञानिक खेती अपनाकर और कृषि वैज्ञानिक एंव कृषि अधिकारियों से विगत वर्षो से संपर्क में रहकर व जुड़कर, कृषि की नई–नई तकनीकियों को अपनाकर अपनी खेतीबाड़ी में क्रियान्वित कर पहले से अधिक आय प्राप्त रहे है जो कि सारणी–2 से स्पष्ट हो रहा है। साथ ही कपिलधारा योजना के माध्यम से कुएं का निर्माण भी करवाया एवम् सिद्ध कर दिखाया है। कि मन में दृढ़ इच्छा शक्ति एंव कार्य करने की ललक हो तो कम क्षेत्र से भी अधिक लाभ कमाया जा सकता है।

चित्र 4 : खरीफ प्याज की खुदे करते हुए मान सिंह जी

सारणी–2 से स्पष्ट हो रहा है कि वर्ष 2009 के वाद कृषि पद्धति की उन्नत तकनाकी अपनाने के कारण जैसे–उन्नत बीज, उन्नत किस्में, उपचारित बीज, समुचित दूरी, पौध संरक्षण व साथ में समन्ति कृषि प्रणाली का सब्जी उत्पादन के रुप में समावेश कर आय में काफी वृद्धि हो रही है तथा कुएं द्वारा सिंचाई की उपलब्धता होने से वह टमाटर, बैगन, मिर्च आदि सब्जियों की खेती कर अन्य फसलों की अपेक्षा अधिक आय प्राप्त कर रहे है साथ ही साप्ताहिक हाट बाजार में स्वयं के खेत पर उत्पादित सब्जियों का उपयोग कर खाने की वस्तुएँ बनाके बेचकर अतिरिक्त आय प्राप्त कर रहे है।

सारणी–3 कृषि संसाधनों एवं औसतन वार्षिक आय में वृद्धि का विवरण।

संसाधनों का नाम	वर्ष 2009 से पहले की स्थित	वर्ष 2011 के बाद की स्थिति
कपिल धारा योजना	निरंक	कुआं का निर्माण
कृषि संसाधन	निरंक	हॉ
स्प्रेयर पंपडी	नहीं	हॉ
जल पंप	नहीं	हॉ
उन्नत छोटे यंत्र	नहीं	हॉ
उन्नत किस्म बीज व दवाएं	नहीं	हॉ
आय में औसतन वार्षिक आय	14600	41750

आज वह अपने कृषि संसाधनों में लगातार बढ़ोत्तरी कर रहे है आज उनके पास एक स्प्रेयर पंप, एक डीजल पंप तथा अन्य छोटे उन्नत यंत्र भी है इन सब के प्रयोग से व उन्नत तकनीकी अपनाकर औसतन वार्शिक आय से बड़ाकर 41750 रूपये तक पहुॅचा ली है इसके अलावा उनके रहन सहन में भी

चित्र 5 : संकर टमाटर के खेत पर भ्रमण करते हुए मान सिंह जी

चित्र 6 : मिर्च के खेत पर भ्रमण करते हुए मान सिंह जी

परिवर्तन आया है आज उनके खेत पर आस–पास गॉव के आदिवासी कृषक उन्नत तकनीको को देखकर सीख रहे है। श्री मानसिंह ने उन्नत तकनीक का फायदा उठाकर अपनी 0.75 हेक्टियर भूमि की फसल सघनता बढ़ाते हुए आमदनी में तीन गुना वृद्धि की है।

निष्कर्ष

यह कृषक गॉव के अन्य कृषकों को उन्नत कृषि की ओर प्रेरित कर रहा है और प्रशिक्षण, भ्रमण, मेला, आदि कार्यक्रमों में भाग लेकर अपने अनुभवों को अंचल के अन्य कृषकों तक पहुॅचा कर प्रेरित करने का कार्य कर रहा है।